राजधानी

काठमाडौं, धरान र बुटवलबाट एकैसाथ प्रकाशित

अंक २९२, काठमाडौं आइतबार १८ चैत २०६९ नेपाल संवत ११३३ । www.erajdhani.com । Email rajdhaninews@gmail.com । RAJDHANI Nepali National Daily । Kathmandu, Sunday 31 March 20

नेपाल

31·3·13

पर्यावरण संरक्षण गर्न अभियान

राजधानी समाचारदाता
काठमाडौं, १७ चैत

पर्यावरणविद् कौशलकिशोर जयसवालले तेस्रो विश्वयुद्ध पानीकै कारण हुने दावी गर्दै त्यसलाई रोक्न पर्यावरण संरक्षण गर्नुपर्ने बताएका छन् ।

निःशुल्क वृक्षरोपणको ४५ वर्ष र वनराखी आन्दोलन ३५ वर्ष पूरा भएको अवसर पारेर शनिवार भारतीय पर्यावरणविद् जयसवालले राजधानीमा पर्यावरण सम्मेलन आयोजना गरेका हुन् । सम्मेलनको उद्घाटन रूखमा राखी बाँधेर गरिएको थियो ।

सो अवसरमा उनले जंगलको सुरक्षा लाठीले नभई रूखमा राखी बाँधेर गर्नसकिने विचार व्यक्त गरे । सन् १९८० मा आफूले नेपालको भ्रमण गरेको स्मरण गर्दै उनले पहिलेको जंगल र झरना नेपालबाट लोप हुँदै गएकोमा चिन्ता व्यक्त गरे । झरना बचाउन गाउँ-गाउँमा पानी पञ्चायत नीति र जंगल बचाउन वन राखी आन्दोलन सुरु गर्नुपर्ने उनले सुझाव दिए ।

'परमाणु ऊर्जा विकासले विश्वमा प्रदूषण ज्यादै फैलिएको छ, सम्भावित तेस्रो विश्वयुद्ध पानीकै कारण हुन सक्छ, त्यसलाई रोक्न पनि प्रकृतिको संरक्षण गर्नुपर्छ,' जयसवालले भने ।

सम्मेलनमा नेपालका सरोज शर्मा, कविराजजी, प्रेमलालबहादुर, हसिना भारतवाट मीर परवेज, मुसलिमजी, अरविन्द, सन्तोष, जर्मनीबाट हाइकी, पेट्रा र जेनिलालगायत पर्यावरणविद्हरूको सहभागिता थियो ।

कर्नाटक
8.9.2008

पत्रिका

वर्ष : 13 » अंक : 221 www.patrika.com

पेज 11 › 5 फीट लम्बी जूती को निहारती विदेशी युवती

...यान पत्रिका
...लूरु (हुबली) सोमवार 8 सितम्बर, 2008

8.9.08

कर्नाटक

...सी में रविवार को सरकारी प्राथमिक स्कूल में पौधारोपण करते पर्यावरणविद ...लाल बहुगुणा।

पर्यावरण को बनाए रखने के लिए वृक्षों का संरक्षण जरूरी : बहुगुणा

पत्रिका संवाददाता

सिरसी, 7 सितम्बर। प्रख्यात पर्यावरणविद सुंदरलाल बहुगुणा ने कहा कि मनुष्य का जीवन पेड़ों पर निर्भर है। इसलिए वृक्षों का संरक्षण जरूरी है। वे रविवार को यहां सिरसी में वृक्ष बचाओ, अप्पीको व चिपको आंदोलन की 25वीं वर्षगांठ के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में कहा कि बच्चों से बूढ़ों तक हर किसी को पेड़ों की है। पेड़ शंकर भगवान की तरह है। उन्होंने कहा लोग अपने जीवित समय कि सुरक्षा व जरूरत के लिए पेड़ों को बचाना चाहिए। सिर्फ एक दो पेड़ों से कुछ भी नहीं होता। वनों व जंगलों के संरक्षण से ही प्रदूषण की समस्या का निवारण होता है। प्रदूषण सबसे बड़ी समस्या है। विज्ञान कहता है प्रदूषण आकाश की तरफ जाता है तथा फिर बारिश के रूप में भूमि पर ही गिरता है। इससे प्रकृति में को कष्ट पहुंचता है। पेड़ बचेंगे तो शुद्ध वातावरण मिलेगा। वहीं प्लास्टिक, फाइबर, फर्टीलैसर पर्यावरण को नुकसान पहुंचाते हैं। इससे भूमि को भी नुकसान पहुंचता है। कार्यक्रम में उपस्थित बच्चों से उन्होंने अनुरोध किया कि जहां भी पेड को काटते देखो उसके संरक्षण का प्रयास किया जाए। अगर कोई भी पेड़-पौधा लगाते है तो बकरियों के मुंह में पानी आ जाता है। पर्यावरण संरक्षण के लिए पेड़ों को लगाना चाहिए। समारोह के बाद पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि हमारे पास 300 सौर्य उर्जा योजना के स्रोत है। सौर्य उर्जा योजना अत्युत्तम ऊर्जा है। इसको प्राथमिकता मिलनी चाहिए। पश्चिमी देश के लोगों ने सौर्य तथा हवा के स्रोतों को अहमियत दी है। हमें भी इस ओर ध्यान देना है। इसके साथ अन्य ऊर्जा स्रोतों जैसे बहती नदियों की योजना, गोबर अनिल योजना आदि उप ऊर्जा स्रोत बनते है। यह भी सच है नदी के बहाव को रोककर बांध निर्माण करने से वातावरण में उष्णता बढ़ती है। सच यह है पेड़ ही नैसर्गिक बाध है। बांधों के निर्माण से उर्जा में बढ़ोतरी के बजाय इसके लिए काटे जाने वाले पेड़ों से शक्ति की खपत होती है। नदियां सिर्फ मानव के लिए नहीं है। नदी भी अपने आप में नैसर्गिक शक्ति का स्रोत भी है। हमारी भूमि बुद्ध, गांधी की भूमि है। इस अवसर पर कौशल झारखंड ने कहा आधुनिक विश्व में [illegible] स्थापित कर रहे लोग पर्यावरण के लिए नुकसानदेह बन रहे हैं। पर्यावरण को बचाने के लिए पौधारोपण किया जाना चाहिए। [illegible] से [illegible] की सेवा होती है परन्तु पर्यावरण की सेवा से [illegible] की रक्षा होती है। उन्होंने अपील की कि पर्यावरणप्रेमी बनकर [illegible]। उत्तर कन्नड़ [illegible] नागराज हेगडे ने कहा ९० के दशक में, [illegible] के पितामह सुंदरलाल बहुगुणा है। वह नीति उनका आंदोलन का फल है। राज्य में उन दिनों वीरेंद्र पाटिल सरकार ने हरे पेड काटने के विरुद्ध आदेश जारी किया था, जो अब तक जारी है। पर्यावरण संरक्षण के लिए सब मिलकर कार्य करे। जिला पंचायत सदस्य जी.एन.हेगडे मुरीगार ने कहा कि 25 साल पहले सन 1983 में सिर्फ कुछ पर्यावरणप्रेमियों के जुनून से आरंभ आंदोलन को आज घर-घर तक पहुंचाना है। सभा में विमला बहुगुणा, रिजर्व बैंक कि निवृत्त अधिकारी रामकृष्ण तथा अन्य आंदोलन प्रमुख तथा स्थानीय पर्यावरणविद आंदोलनकारी व चिंतक उपस्थित थे।

कर्नाटक बेंगलूरु

राजस्थान पत्रिका
rajasthanpatrika.com | patrika.com
बेंगलूरु शुक्रवार, 28 अगस्त 2015

गुस्से की राजनीति का असर...

बोल्ट का गोल्डन डबल...12

बेंगलूरु शुक्रवार, 28.08.2015 28.8.15

पर्यावरण बचाने पेड़ों को बांधी राखी

बेंगलूरु. विश्वव्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान के तहत गुरुवार को शहर के जगुर गांधी कृषि विश्वविद्यालय में वनराखी का आयोजन किया गया।

अभियान के केंद्रीय अध्यक्ष कौशल किशोर जायसवाल मुख्यअतिथि थे। उन्होंने पेड़ को राखी बांधकर कार्यक्रम की शुरुआत की। इसके बाद बड़ी संख्या में उपस्थित विद्यार्थियों व अतिथियों पेड़ों को राखी बांधी। आयोजन के दौरान फलीसियम, नीम, चंदन, पीपल के पौधे भी लगाए गए। जायसवाल ने अभियान के बारे में विस्तार से जानकारी दी और इसकी व्यापकता के बारे में बताया। उन्होंने पेड़ों की रक्षा के लिए संकल्प भी दिलाए। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के निदेशक डॉ कुमार, डॉ राजेगौड़ा, डॉ वीसी रेड्डी सहित कई लोग मौजूद थे।

जगुर गांधी कृषि विश्वविद्यालय में पेड़ों पर रक्षा बंधन पौधा रोपण

hindustantimes
hindustantimes.com
THURSDAY, JUNE 16, 2016
Ranchi Vol 13 No 140 Price ₹4.00 20 pages including four pages of HT City

RONALDO SULKS AFTER DRAW WITH ICELAND
STAR FOOTBALLER FACES CRITICISM FOR POOR SPORTSMANSHIP

POLIO VIRUS RESURFACES ›ht nation p9

OBAMA BLASTS TRUMP'S MUSLIM PLANS, SAYS NOT THE AMERICA WE WANT ›ht world p12

KK Jaiswal's green war has now spread to 18 Indian states – besides the neighbouring countries of Nepal and Bhutan. B VIJAY MURTY/HT

This Jharkhand man wants to save the world by planting trees

HT SPECIAL

B Vijay Murty
letters@hindustantimes.com

PALAMU: In 1981, Lakshmi Singh – the late mukhiya of Khendra in the extremist hotbed of Palamu district – went against the grain by planting trees in fallow land spread over seven acres. Nine years later, Maoists killed him because they considered him an upper caste landlord who exploited Dalits in the village.

Somehow, Singh's family managed to make ends meet. However, when it was time for young Khushboo to be married off in 2005, the late village head's widow had no money to arrange for a ceremony. She sold the trees to conduct a grand wedding worthy of their daughter's name.

In 1996, Maoists killed Nezam Mukhiya – the head of Khairodohar village in the same district – after branding him a spy. Fortunately, he had also planted trees over 10 acres of barren land a decade ago. When Nezam's daughter attained marriageable age in 2006, the family sold half the trees to a timber merchant and conducted a gala wedding for her.

The families of both Singh and Nezam have more in common than their similar histories. Both the village heads had taken local green crusader K K Jaiswal's advice of planting trees in the fallow land of rain-shadowed Palamu – something that eventually came to the aid of their families.

> I am sure the third world war will be for water. The only way to avert the war is by planting trees. Today, we are forced to carry water in pet bottles. Very soon, we will be travelling with our own oxygen cylinders
>
> KK JAISWAL, local green crusader in Jharkhand

The 59-year-old crusader had stressed then that as both Singh and Nezam had no bank account or savings, the trees could prove to be valuable fixed deposits for the future. It was a tough call to take, considering that rural folks of those days believed that the government takes over any farmland you dare plant trees on.

Today, Jaiswal's words have come to the rescue of not just the families of Singh and Nezam, but also hundreds of other villagers who have taken to converting fallow land into jungles.

Jaiswal launched his green crusade from Palamu's Daali panchayat, his birthplace, in 1976. Today, it has spread to 18 Indian states – besides the neighbouring countries of Nepal and Bhutan. Till now, he has reportedly distributed around 31 lakh saplings at his own expense among residents of various states.

Jaiswal's motivational speeches on treating trees as fixed deposits have earned him multitudes of followers in rural areas. Unlike other green crusaders, Jaiswal's philosophy allows people to cut trees whenever they run short of money. "Jungles may be the nation's wealth, but the trees on a farmer's land are his wealth. He has every right to cut them when required. Every tree is worth 10 sons for a farmer," the environmentalist stresses.

Though various government agencies and NGOs have felicitated Jaiswal for his efforts, it's Chipko movement leader Sundar Lal Bahuguna's words that he cherishes the most. "You are doing a wonderful job of spreading environmental awareness in a backward, tribal-dominated state like Jharkhand. Your efforts should fetch you more awards and recognitions," says a letter from Bahuguna, which adorns the wall of Jaiswal's drawing room in Daltonganj.

Government officials also sing the green crusader's praises. "His efforts have generated a mass movement on tree plantation in the rain-shadow areas of Jharkhand and Bihar," says Laxmi Narayan Damor, former regional chief conservator of forests (RCCF), Jharkhand.

Jaiswal believes that planting trees is the only way to ensure the planet's survival. "I am sure the third world war will be for water. The only way to avert the war is by planting trees. Today, we are forced to carry water in pet bottles. Very soon, we will be travelling with our own oxygen cylinders," he cautions.

16·6·16

10.8.11 U.P
वाराणसी बुधवार 10 अगस्त 2011

अमर उजाला

तापमान
अधिकतम 29° न्यूनतम 24°
सूर्योदय 05:30 सूर्यास्त 06:36
श्रावण शुक्ल 12 वि 2068

एजबेस्टन में तीसरा टेस्ट आज से 15

पौधों समेत विभिन्न जीव-जंतुओं की अनेकों प्रजातियां लुप्त हो गई हैं, और कई विलुप्ति के कगार पर

पर्यावरण असंतुलन से मानव अस्तित्व को खतरा

माड़ा के जंगल में पेड़ों को राखी बांधती छात्राएं और लोग।

संवाददाता

अनपरा। भारत सहित विश्व समुदाय ने शीघ्र पर्यावरण को गंभीरता से नहीं लिया तो अगले सौ वर्षों में मानव का धरती से अस्तित्व मिट जाएगा। यह दावा हम नहीं विश्च पर्यावरण संरक्षण अभियान के प्रणेता कर रहे। मध्यप्रदेश के माड़ा से नेपाल तक पेड़ों को राखी बांधने के अभियान का आगाज करने वालों ने कहा कि आकड़े बताते हैं। देश भर में वृक्षों की संख्या में भारी कमी आई है। इससे धरती पर पर्यावरण असंतुलन का खतरा कई गुना अधिक बढ़ गया है। पौधों समेत विभिन्न जीव-जंतुओं की अनेकों प्रजातियां लुप्त हो गई हैं, और कई विलुप्ति के कगार पर हैं।

अंतरराष्ट्रीय पर्यावरणविद सुंदरलाल बहुगुणा, श्रीमती मेनका गांधी, मेधा पाटकर को प्रेरणास्त्रोत मानने वाले और देश के पांच राज्यों में पर्यावरण संरक्षण में अहम भूमिका निभाने वाले कौशल किशोर जायसवाल ने यहां बताया कि उन्होंने मानव जाति की सुरक्षा के लिए माड़ा से नेपाल तक वन राखी बांधने का संकल्प लिया है। श्री जायसवाल ने बताया कि उनका यह मूवमेंट सफलता मिलने तक जारी रहेगा। उन्होंने बताया कि अंग्रेजी हुकुमत से लेकर 1990 के दशक तक सरकारों ने जंगलों पर ध्यान नहीं दिया जिससे देश भर में पेड़ों की संख्या आधे से भी कम रह गई है। नतीजतन देश में पाए जाने वाले 1336 पौधों के प्रजातियों पर अस्तित्व का संकट पैदा हो गया है। पौधों की 70 फीसदी प्रजातियां और पानी में रहने वाले जीवों की 37 फीसदी प्रजाति तथा 1147 प्रकार की मछलियों पर विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। जंगल के विस्तार पर काम न हुआ तो अगले सौ वर्षों में मानव का धरती से सफाया हो जाएगा। ग्लोबल वार्मिंग, हिमालय के तेजी से पिघलते ग्लेशियर तथा विश्व के तमाम देशों में हाल के वर्षों में आई सुनामी, जापान में आए जलजले में भयंकर धन और जन की तबाही भविष्य के खतरों के प्रति आगाह कर रहे हैं।

वाराणसी, ११ अगस्त, २०११

वनोंकी सुरक्षा लाठीसे नहीं, राखीसे होगी

रेणुकूट(सोनभद्र)। विश्व व्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान के तहत मंगलवार को पिपरी इण्टर कालेज परिसर में पर्यावरण पर गोष्ठी पौध वितरण एवं रोपण वनों पर रक्षाबन्धन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ केन्द्रीय अध्यक्ष राखी, मुवमेन्ट के प्रनेता पर्यावरण बिन्द कौशल किशोर जायसवाल ने की। उद्घाटन भाषण में कहा गया कि वनों की सुरक्षा लाठी से नहीं राखी से होगी। वे वृक्षों पर राखी बांधकर उसे बचाने की कामना की। वे पांच राज्यों के सात जिलों के ब्लैक सैडो फ्लोराइड ड्राईजोन, अन्न फल, जल संकट दूर करने के उद्देश्य से मध्य प्रदेश के सिंगरौली, उत्तर प्रदेश सोनभद्र, छत्तीसगढ़ सरगुजा, झारखण्ड के पलामू, गढ़वा, लाटेहार, बिहार के गया वृक्षों पर रक्षाबन्धन पौधारोपण करते हुए नेपाल में इस अभियान का समापन होगा। कौशल किशोर जायसवाल ने कहा कि वनों की कटाई से प्रकृति का रिमोट फेल हो गया है। जिससे कई प्राकृतिक आपदाओं में लोगों के साथ पशु-पंखी लाखो-लाख की संख्या में काल के गाल में समा गये। जिसका गवाह सुनामी एवं जापान हैं। जिससे तीसरा विश्वयुद्ध जल संकट के कगार पर खड़ा है। उन्होने कहा कि अकेले भारत में ही लगभग 1336 प्रजातियों के पौधे असुरक्षित एवं संकट से जूझ रहे हैं। धरती से 7291 जीवन प्रजातियां विलुप्त के कगार पर हैं। पौधों के सत्तर फीसदी प्रजातियां और पानी में रहने वाले जीवों के सत्तर प्रतिशत प्रजातियां और 1147 प्रकार की मछलियों पर भी विलुप्ति का खतरा मंडरा रहा है। यदि यहीं हाल रहा तो आज लोग पानी की बोतल चल रहे हैं और आने वाले दिनों में लोग आक्सीन के सिलेण्डर लेकर चलेंगे। आने वाले सौ वर्षो में मानव का धरती से सफाया हो जायेगा। संचालन कर रहे मीरपरवेज अख्तर ने कहा कि सदियों से वृक्षों की पूजा होती चली आ रही है। आप भी इसे बचाएं। इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य विद्या प्रसाद सिंह ने अभियान के महत्वों पर प्रकाश डालते हुए विद्यालय के छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों से पौध रोपण व संरक्षण के लिए अपील किया। इस मौके पर मुश्किल अंसारी, संतोष प्रजापति, विपिन साहू, देव कुमार समेत तमाम लोग मौजूद थे।

वृक्षोंपर राखी बांधकर रक्षा बांधकर विश्वव्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियानका शुभारम्भ

आज सोनभद्र

9·8·11 मध्य प्रदेश

नव भारत
सतना, मंगलवार 9 अगस्त, 2011 नव भारत

माड़ा से नेपाल तक वन राखी बाधेंगे कौशल

पर्यावरण की रक्षा के लिए पेड़ो को रक्षा सुत्र बांधते सामाजिक कार्यकर्ता।

सिंगरौली 8 अगस्त का. माड़ा के पहाड़ी नव वृक्षो पर रक्षा बंधन कर राखी मुहमेन्ट के 11वां स्थापना दिवस कार्यक्रम का आयोजन का शुभारंभ पर्यावरण वृक्षराखी कौशल किशोर जायसवाल ने की. उद्घाटन भाषा में कहा कि मेरे द्वारा चलाये जा रहे राखी मुहमेन्ट के 11वां वर्ष पूरा होने पर

मैने निर्णय लिया है कि माड़ा से नेपाल तक निजी खर्च से अभियान चलाकर वनो के सुरक्षा लाठी से नही राखी से होगी व देश के पांच राज्यो के 7 ब्लैक शैडो फालोराइड एवं ड्राईड्रोजन जिलो को चयनित किया है जिसे अन्न, फल, जल संकट दुर करने के उद्देश्य से श्री जायसवाल ने कहा कि प्राकृतिक रिमोन्ट जंगल है जंगल है तो मंगल है. क्यो कि रिस्ते के भाई से ज्यादा जीवन रूपी वृक्ष भाई के सुरक्षा से जीव जगत की रक्षा हो सकती है. उन्होने ने कहा कि वृक्षो की अंधाधुन्ध काटाई जिस अनुपात में कटाई हो रही है. उस अनुपात में वनो की रोपाई नही हो रही है. जिस कारण से प्राकृतिक आपदा के लाखो लाख की संख्या में लोग काल की गाल में समा जा रहे हैं. तथा कई जीव समाप्त हो गये है कई समाप्ति की कगार पर है.

नीति-क्रांति

सिंगरौली, मंगलवार 9 अगस्त 2011 · 12

माड़ा से नेपाल तक वन राखी बांधेगे-कौशल

सिंगरौली। सिंगरौली के माड़ा पहाड़ी के वन वृक्षों पर रक्षा बंधन कर राखी मुहमेन्ट के ११वां स्थापना दिवस कार्यक्रम का आयोजन का शुभारंभ पर्यावरण वित्त राखी समारोह मुहमेन्ट के प्रणेता कौशल किशोर जायसवाल ने कि। उद्घाटन भाषण में कहा कि मेरे द्वारा चलाये जा रहे राखी मुहमेंट के ग्यारहवां वर्ष पूरा होने पर मैंने निर्णय लिया है कि माड़ा से नेपाल तक निजी खर्च से अभियान चलाकर वनो के सुरक्षा लाठ‍ से नही राखी से होगी। व देश के पाँच राज्यों के ७ ब्लेक सैडो, फलोराईट एवं ड्राई जोन जिलों को चयनित किया है। जिसे अन्न फल, जल संट दूर करने के उद्देश्य से माड़ा गुफा आँवला, पिपल, समी, कटहल के पौधा लगाये शिक्षक। श्री जायसवाल ने कहा कि प्राकृतिक के रिमोन्ट जंगल है, जंगल है तो मंगल है, क्योंकि रिश्ते के भाई से ज्यादा जीवन रूपी वृक्ष भाई के सुरक्षा से जीव जगत कि रक्षा हो सकती है। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी हुकूमत से १९९० के दशक तक जिसका भी सरकार रहा अंधाधुंध वनो की कटाई किया गया। जिससे अनुपात मे वनों की कटाई कि गई उस अनुपात मे वनो की रोपाई नही की गई। जिसके कारण कई प्राकृतिक आपदा के लाखों लाख की संख्या में लोग काल कि गाल में शमा गये, साक्षी सुनामी और जापान है। तथा जल संकट विश्व छुब्द होने की कगार पर है। तथा ई जीव समाप्त हो गये कई समाप्ति के कगार पर हैं। अकेले भारत मे ही लगभग १३३६ प्रजातियों के पौधे असुरक्षित और संकट से जुझ रहे हैं। धरती से ७२९१ जीव प्रजातिय विलुप्त के कगार पर हैं। पौधे की ७० फीसदी प्रजातियां और पानी मे रहने वाले जीवों की ३७ फीसदी प्रजातिय और ११४७ प्रकार कि मछलियों पर भी विलुप्ति का खतरा मंडरा रहा है यदि समय रहते पौधे नही लगाये गये तो वनो की सुरक्षा नही किये गये तो १०० वर्षो में मानव के धतरी से सफाया हो जायेगा। इस मौके पर नी परवेज अख्तर, मुस्लिम अंसारी संतोष कुमार माड़ा आदि उपस्थित रहें। यह कार्यक्रम माड़ा गुफा से यूपी सोनभद्र, छत्तीसगढ़, झारखण्ड पलामू, गढ़वा, बिहार, नेपाल के कठिमान्त्य राज्य भवन में होंगे।

योद्धाओं का नमन

राष्ट्र व राज्य की बुनियाद नागरिकों, उनके कर्तव्यों, जिम्मेदारी के एहसास मे छुपी होती है। यह वह अंडर करंट होती है जो समाज की शिराओं मे दौड़ता है, उसे ऊर्जा देता है। इसी अंडर करंट के चालक चेहरो को दैनिक जागरण ने झारखंड में अपने 10 वे स्थापना दिवस पर अपनी प्रेरणा का स्रोत मानते हुए सम्मानित किया। शहर से लेकर गांव या जंगल मे चुपचाप बदलाव के ये वाहक कदम बढा रहे हैं। दैनिक जागरण उनके प्रयासों को नमन करता है। उन्हें सम्मानित करने के साथ यह भी कामना है कि यह कारवां बनता जाए, बढ़ता जाए। साहित्य, पर्यावरण संरक्षण, खेती-किसानी, स्वास्थ्य, कला संस्कृति, खेलकूद, शिक्षा से लेकर जीवन के तमाम क्षेत्रो मे क्रांति के अगुवा बने ऐसे ही लोगो का रविवार को जुटान दैनिक जागरण के स्थापना दिवस पर उसकी ताकत बनी। जागरण परिवार भरोसा दिलाता है कि बदलाव ऐसे एकल या सामूहिक प्रयासो को वह पहचान देता और दिलाता रहेगा। साथ ही प्रत्येक कार्य में अपनी अग्रणी भूमिका निबाहता रहेगा।

राज्यपाल झारखण्ड से सम्मान
13·2·12

समारोह में राज्यपाल के हाथों सम्मानित होते पर्यावरणविद् कौशल किशोर जायसवाल।

राष्ट्रीय बॉल
सम्मानित क

आम की लकडी का वितरण करती डीसी, कौशल किशोर जायसवाल व अन्य।

दैनिक जागरण रांची, 13 फरवरी 2012

पलामू

13·2·12

राष्ट्रीय नवीन मेल डालटनगंज (मेदिनीनगर) १२ नवंबर, २०१०

जायसवाल के कार्य सराहनीय है : डीसी

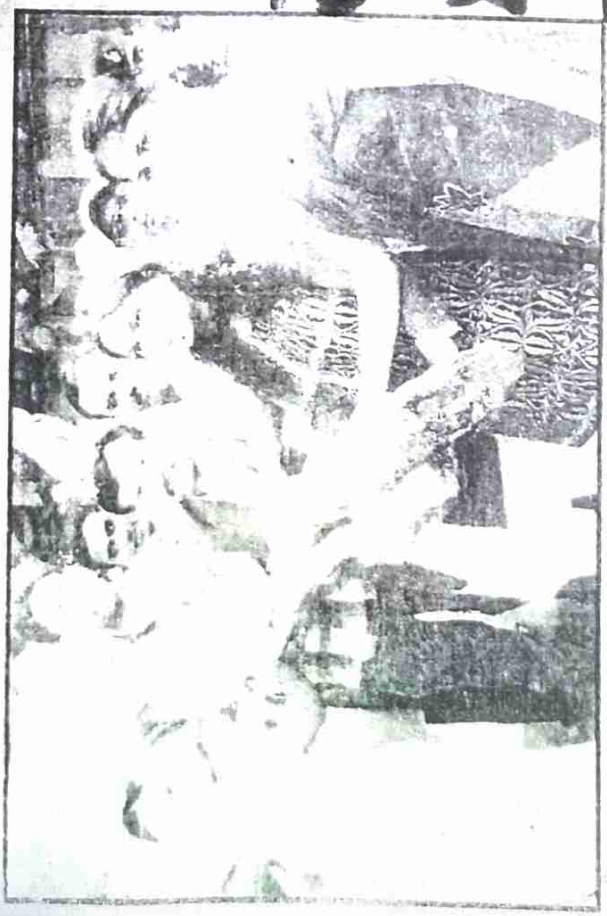

कर्नाटक
बेंगलुरु

हिन्दुस्तान रांची • शुक्रवार • 28 अगस्त 2015

पलामू में वनराखी मूवमेंट शुरू, कर्नाटक के कृषि विवि में हुआ समापन

राखी बांध पेड़ों की रक्षा का संकल्प

मेदिनीनगर | प्रतिनिधि

विश्वव्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान द्वारा चल रहे राखी मूवमेंट के 41वें स्थापना दिवस का समापन कर्नाटक राज्य के बंगलुरू जगुर गांधी कृषि विवि में पेड़ों में राखी बांधकर किया गया। गुरुवार को वहां पौधरोपण किया गया। जुलाई में इसकी शुरुआत पलामू जिले के डाली गांव से हुई थी।

पर्यावरण धर्म सम्मेलन का उद्घाटन अभियान के केंद्रीय अध्यक्ष कौशल किशोर जायसवाल ने किया। उन्होंने कहा कि वे वनराखी मूवमेंट के प्रणेता के रूप में भारत समेत नेपाल, भूटान में यह अभियान छेड़ रखा है। कृषि विवि में फेलेसियम, नीम, चंदन, पीपल आदि के पौधे लगाकर आंतरिक प्रसन्नता हो रही है। प्रकृति की उपहार वनों में राखी इसलिए बांध रहे हैं, कि जिस तरह भाई अपनी बहन की रक्षा करता है, उसी तरह हम सब राखी बांध कर पेड़ को बचाने का संकल्प लेते हैं। नेपाल के पशुपति नाथ मंदिर से लेकर आंध्र प्रदेश के तिरुपति मंदिर होते हुए तमिलनाडु तक पौधा लगाने और बांटने का काम कर रहे हैं। अंधाधुंध वनों की कटाई से वनों का क्षेत्रफल 33 फीसदी से घट कर 15 फीसदी रह गया है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता निदेशक डॉ बी कुमार ने की। मौके पर डॉ राजेगोड़ा, डॉ बीसी रेड्डी, मुत्तु राजू, अजीत कुमार, वेंकटेश मूर्ति, रामकृष्ण, निलय कुमार, अरविंद कुमार आदि मौजूद थे।

कर्नाटक के कृषि विवि में वनराखी कार्यक्रम में कौशल किशोर जायसवाल।

प्रभात खबर \पलामू

वनराखी मूवमेंट से ही बचेगी प्रकृति : कौशल

- वनराखी मूवमेंट के 41 वें वर्ष पर कर्नाटक के जगूर गांधी कृषि विवि में हुआ कार्यक्रम

मेदिनीनगर. कर्नाटक के बेंगलुरु जगूर गांधी कृषि विश्वविद्यालय में पर्यावरण धर्म व वनराखी मूवमेंट के 41 वें वर्ष पर कार्यक्रम आयोजित की गयी. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पर्यावरण सरक्षण अभियान के केंद्रीय अध्यक्ष सह वनराखी मूवमेंट के प्रणेता कौशल किशोर जायसवाल ने पेड़ों में राखी बांध कर व पौधा लगा कर कार्यक्रम का उदघाटन किया. मौके पर श्री जायसवाल ने कहा कि पर्यावरण धर्म व वनराखी मूवमेंट से ही पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है. बहन अपने भाई के कलाई पर राखी बांध कर उसकी सुरक्षा की कामना करता है, परंतु कृष्ण पर राखी बांधकर सुरक्षा की कामना करने से संसार के सभी जीवों की सुरक्षा होती है. श्री जायसवाल ने कहा कि आजादी के बाद से अभी तक अंधाधुंध पेड़ों की कटाई की जा रही है. पेड़ों के कटाई के अनुपात में पौधे नहीं लग रहे है. उन्होंने पर्यावरण धर्म के आठ मूल मंत्र की शपथ भी दिलायी. उन्होंने लोगों से अपने जन्मदिन सहित अन्य उत्सवों के मौके पर पौधा लगाने की अपील की. कार्यक्रम की अध्यक्षता कृषि विश्वविद्यालय के निदेशक डॉ कुमार ने की. इस मौके पर डॉ राजे गोडा, डॉ बीसी रेड्डी, डॉ मुतु राजू, अजीत कुमार, व्योमकेटेस मूर्ति रामकृष्ण, निलय कुमार, अरविंद कुमार सहित विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राएं मौजूद थे.

पेड़ों मे राखी बाधते कौशल व अन्य

28.8.15

the pioneer nation 02
RANCHI THURSDAY I JULY 28, 2016

28.6.16

'Man on a Mission' plans to plant 50 lakh trees by 2020

PNS ■ RANCHI

Moved by the hardships of famine he witnessed in his childhood days, Kaushal Kishore Jaiswal, a social worker from Palamu, has now dedicated his life to protect the environment and encourage others to recognise the need for it.

Jaiswal was in Ranchi on his journey to plant trees in five states, starting from Siwan in Bihar and ending at Uttar Kannad district of Karnataka, to commemorate the 47th anniversary of his environment-saving revolution.

Coming from the arid district of Palamu, Jaiswal believes environmental crisis to be one of the biggest problems in world today, which can be countered only by planting trees.

"A serious food shortage ravaged the then undivided Bihar in 1966. Sustenance was hard to come by. During this phase, I heard my father talking to the villagers that this calamity was caused due to trees being felled. Learning from this, I decided that I will not allow any forests to be cut down," Jaiswal recounted.

Acting on this decision, he planted trees on his land sprawled over 7.72 acres at his ancestral village Dali in Chhatarpur Block of Palamu in 1968. Along with it, Jaiswal encouraged farmers of his village to plant trees, but they had reservations about it.

Teachers and students of Plus Two High School BIT Mesra take the Green Pledge with head of Vanrakhi Movement Kaushal Kishore Jaiswal in RAnchi on on Tuesday

Pioneer photo

"In the beginning, the farmers were apprehensive of turning their farmlands into forests as the government can assert claims to their lands. I had to convince them that planting trees will create assets for them in the form of forest resources," Jaiswal said.

In 1970, Jaiswal started the Vanrakhi Movement in a bid to make environment protection appeal to the religious nature of people. "Forests cannot be protected with force alone. The objective of environment protection will be difficult to achieve unless it is joined with religion," he said.

Jaiswal has also worked alongwith well-known environmentalist Sunder Lal Bahuguna during Chipko Movement and later in Appiko Movement. The movement he started from his native place has now spread to 18 states of India and beyond national boundaries to Nepal and Bhutan. In his 47 years of service to the nature, Jaiswal has never taken any aid from either the government or non-government organisations. Family has supported me in my endeavours; apart from that, no one came forward to help nor I asked for any help, he said.

hindustantimes
hindustantimes.com
NIFTY 8,114.70 -15.95 SENSEX 26,768.49 -44.93 DOW JONES 17,905.58 -170.69 NASDAQ 5,059.13 -40.106 ₹/$ 63.75 +0.25 ₹/EURO 71.62 +0.96 GOLD/10G 27,000.00 -204 SILV
SATURDAY, JUNE 06, 2015
Ranchi Vol. 12 No. 131 Price 4.00 16 pages including four pages of HT City

'Reckless exploitation of natural resources leads to calamities'

HT Correspondent
htjharkhand@hindustantimes.com

RANCHI: On the occasion of World Environment Day, environmentalist Kaushal Kishore Jaiswal tied raksha dhaga (string) to trees in a forest that were planted by him 47 years ago in Palamu. This forest has 4,000 trees.

He believes in treating trees as family members and has been relentlessly creating awareness about environment protection across the country. "I tell people that they should treat trees as members of their family and care for them. If we do not take preventive steps now, the future generations will suffer a great deal," said Jaiswal.

When he was a young boy, the famine of 1966 moved him deeply after seeing the effect that it had on people. "People said that the famine had occurred because of reduction in forest cover," he said.

Since then he resolved to strive towards improving the environment. Being a nature lover, Jaiswal began travelling from village to village with a few people and banners to make the villagers aware of guarding trees, water, forests, soil and the environment as a whole. In 1976, he also initiated Paryavarandharm and made the BanRakhi movement a part of it, o save trees. He advised people o tie knots on the trees and feel them like a family member. The outcome is that the dry zone of Palamu has been converted into lush green landscape.

Kausal Kishore Jaiswal ties a Rakhi on the tree in Palamu on World Environment Day. HT PHOTO

JAISWAL BELIEVES IN TREATING TREES AS FAMILY MEMBERS AND HAS BEEN CREATING AWARENESS ABOUT THE ENVIRONMENT

"In Palamu district alone, we have planted 27 lakh trees and 31 lakh trees across India, Bhutan and Nepal," said Jaiswal.

The environmentalist has received appreciation from Sundar Lal Bhauguna- Chipko Movement leader and social worker, George A James-Research Centre, USA and Saroj Sharma of Nepal. He has been nominated for the IPVM award by the Principal Chief Conservator of Forests of Jharkhand and has received a certificate Jharkhand government as recognition of his work.

Jaiswal feels that rapid industrialization has resulted in nature imbalance. "The reckless extraction of resources for development without compensating the environment has been the major reason for floods and other calamities," he said adding, "The need of the hour is to save our environment through efforts of replenishing all that we have destroyed."

His name and activities have also been incorporated in books meant for standard 6 of ICSE and standard 8 of CBSE.

6.6.15

कर्नाटक
28·8·15

रांची, शुक्रवार, 28 अगस्त 2015
www.sanmargjharkhand.com
सन्मार्ग

राखी बांधकर करें पेड़ों की रक्षा : कौशल

संवाददाता

मेदिनीनगर : विश्वव्यापी पर्यावरण संरक्षक अभियान के केन्द्रीय अध्यक्ष एवं पर्यावरण धर्म व वनराखी मूवमेंट के अगुवा सह भाजपा नेता कौशल किशोर जायसवाल ने कर्नाटक के बेंगलुरु जगुरगांधी कृषि विश्वविद्यालय में पर्यावरण धर्म व वनराखी मूवमेंट का 41वां स्थापना वर्ष मनाते हुए मौके पर आयोजित पर्यावरण धर्म सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि जिस तरह बहनें भाई की कलाई पर राखी बांधकर उनकी सुरक्षा की कामना करती हैं उसी तरह वन-वृक्षों पर राखी बांधकर उसकी सुरक्षा की कामना करने से संसार के सभी जीव जगत की सुरक्षा होगी। उन्होंने बताया कि 31 मार्च 2013 को नेपाल के पशुपति से शुरू किया गया पौधा वितरण सह रोपण अभियान आन्ध्रप्रदेश के तिरूपति और तमिलनाडु होते कर्नाटक में समाप्त किया जा रहा है। इस सम्मेलन का उदघाटन श्री जायसवाल ने पेड़ों को राखी बांधकर एवं फेलेसियम नीम, चंदन, पीपल आदि का पौधा लगाकर किया। श्री जायसवाल ने कहा कि अंग्रेजी हुकूमत के बाद 90 के दशक तक जिनकी भी हुकूमत रही उन्होंने वनों की अंधाधुंध कटाई करवाया। जिस अनुपात में वनो की कटाई की गयी उस अनुपात में पेड़ नहीं लगाये गये। नतीजा वनों का क्षेत्रफल 33 से घटकर 15 प्रतिशत हो गया। जिस कारण प्रदुषण बढ़ा है। जिससे प्रकृति के सभी सजीव व निर्जिव वस्तुएं प्रभावित हुई हैं। इतना ही नहीं नित्य नयी-नयी बीमारियां एवं प्राकृतिक आपदाओं का कहर झेलना पड़ रहा है। प्रदुषण के कारण लाखों पशु-पक्षी काल की गाल में समा गये हैं। उन्होंने पर्यावरण धर्म का आठ मूल मंत्र अपनाने का आहवान करते हुए प्रत्येक व्यक्ति से अपने जन्म दिन पर एक पौधा लगाने की अपील की। उन्होंने कहा कि जन, जल, जंगल, जमीन, जानवर, प्रकृति एवं पशु की रक्षा कर तथा शहर में आकाश बाग एवं गांव में बीज खेती से हरियाली के साथ खुशहाली की कामना कर सकते है। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कृषि विश्वविद्यालय के निदेशक डा. कुमार ने की। मौके पर डा. राजे गोड़ा, डा. वीसी रेड्डी, डा. मुतु राजु, अजीत कुमार, व्योमकटेश मूर्ति, रामकृष्ण, नीलय कुमार, अरविन्द कुमार आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने पर्यावरण के आठ मूल मंत्र के अनुपालन की शपथ ली।

पर्यावरण धर्म पर सम्मेलन का आयोजन

वृक्षों पर राखी बांधकर जीव जगत की सुरक्षा : कौशल

मेदिनीनगर। कर्नाटक के बंगलुरू जगुरगांधी कृषि विवि में पर्यावरण धर्म व वनराखी मूवमेंट के 41वां वर्ष स्थापना पर पर्यावरण धर्म पर सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसके मुख्य अतिथि विश्वव्यापी पर्यावरण अभियान के केंद्रीय अध्यक्ष सह पर्यावरण धर्म व वनराखी मूवमेंट के प्रणेता कौशल किशोर जायसवाल ने वनों पर राखी बांधकर एवं पौधा लागकर उदघाटन किया।

उन्होंने फेलेसियम नीम, चंदन, पीपल आदि के पौधे लगाये। उन्होंने कहा कि पर्यावरण धर्म व वनराखी मूवमेंट से बचेंगे प्रकृति और जीवन। बहन अपने मानवरूपी भाई के कलाई पर राखी बांधकर उसकी सुरक्षा की कामना करती है परंतु जीवनरूपी वन वृक्षों पर राखी बांधकर सुरक्षा की कामना करने से संसार के सभी जीव जगत की सुरक्षा होगी।

श्री जायसवाल ने कहा कि 31 मार्च 2013 को नेपाल के पशुपति से आंध्र प्रदेश के तिरूपति, तमिलनाडु होते हुए पर्यावरण धर्म व वनराखी मूवमेंट निःशुल्क पौधा वितरण सह रोपण अभियान को कर्नाटक में समाप्त किया जा रहा है। श्री जायसवाल ने कहा कि अंग्रेजी हुकूमत से 90 के दशक तक जिसका भी हुकूमत रहा अंधाधुंध वनों की कटाई करायी गयी। जिस अनुपात में व[illegible] की गयी उस अनुपात में वनों की रोपाई नहीं होने के कारण वनों का क्षेत्रफल 33 प्रतिशत से घटकर 15 प्रतिशत हो जाने के कारण एवं परमाणु उर्जा, फैक्ट्री, रसायन खाद्य, गाड़ियां व आधुनिक सुविधा से प्रदूषण बढ़ा है।

उन्होंने कहा कि इससे बचने के लिए पर्यावरण धर्म के आठ मूल मंत्र को अपनायें। प्रत्येक व्यक्ति जन्म दिन पर पौधा लगायें। जन, जंगल, जमीन, जानवर, प्रकृति एवं पक्षी को बचाकर शहर में आकाश बाग व गांव में बीज खेती से हम हरियाली के साथ खुशहाली का कामना कर सकते हैं। जिंदा रहना है तो पौधा लगायें व वन बचायें तभी हम तीसरा विश्वयुद्ध जल संकट को टाल सकते हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कृषि विवि के निदेशक डा कुमार ने की। इस मौके पर डॉ राजेगोड़ा, डा वीसी रेड्डी, डा मुतु राजु, अजीत कुमार, व्योकटेश मूर्ति, रामकृष्ण, निलय कुमार, अरविंद कुमार व विवि के सभी छात्र-छात्राओं ने पर्यावरण धर्म के आठ मूल मंत्र की शपथ ली।

खबर मंत्र 17 शुक्रवार 28 अगस्त 2015

कार्यक्रम पर्यावरण धर्म के 41वें स्थापना दिवस पर गोष्ठी सह वृक्षों का रक्षा बंधन कार्यक्रम

वनों की सुरक्षा लाठी से नहीं राखी से होगी : कौशल

संवाददाता

मेदिनीनगर। छतरपुर के डाली पंचायत के बेलवाटांड़ वनों में पर्यावरण धर्म व वनराखी मूवमेंट के स्थापना के 41वें वर्ष पर पर्यावरण धर्म सह गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसका उद्‌घाटन विश्वव्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान के केंद्रीय अध्यक्ष सह पर्यावरण धर्म व वनराखी मूवमेंट के प्रणेता कौशल किशोर जायसवाल ने वनों पर राखी बांधकर किया।

मौके पर श्री जायसवाल ने कहा कि वनों की सुरक्षा केवल लाठी से नहीं राखी से होगी। बहन अपने मानवरूपी भाई की कलाई पर राखी बांधकर उसकी सुरक्षा की कामना करती है परंतु जीवन रूपी वनों पर राखी बांधकर सुरक्षा की कामना करने से संसार के सभी जीव जगत की सुरक्षा होगी।

श्री जायसवाल ने कहा कि मेरे देश की सभ्यता व संस्कृति में सरना, बरगद, पीपल, नीम, तुलसी,

वृक्षों में रक्षा बंधन कार्यक्रम चलाते कौशल किशोर जायसवाल।

आंवला, समी, बेल एवं केला की पूजा होती है। फिर भी वनों का क्षेत्रफल घटना बड़ी दुर्भाग्य की बात है। वन राष्ट्र की धरोहर है, इसकी रक्षा करना सबका दायित्व है। इसलिए मैंने निजी खर्च पर 41 वर्षों से नेपाल, भूटान समेत देश के 18 राज्यों के 41 जिलों में 31 लाख निःशुल्क पौधा वितरण व रोपण के साथ वनराखी मूवमेंट व पर्यावरण धर्म का अभियान चलाकर जागरूकता लाया है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण बचाने के लिए पर्यावरण धर्म के पर्यावरण बचाने के लिए पर्यावरण धर्म के आठ मूलमंत्र को अपनायें। प्रत्येक व्यक्ति अपने जन्म दिवस पर एक पौधा अश्वय लगायें। जन, जल, जंगल, जमीन, जानवर, प्रकृति एवं पक्षी को बचायें। कार्यक्रम की अध्यक्षता डाली पंचायत के मुखिया सह भाजपा नेता अमित कुमार जायसवाल ने की।

मौके पर उन्होंने कहा कि जब तक गांव हरा-भरा नहीं होंगे तब तक हम खुशहाली की कामना नहीं कर सकते। लोग वृक्षों की खेती करें जिससे अकाल-सुखाड़ का भय नहीं होता।

श्री जायसवाल ने वन बचाने वाले ग्रामीणों को 50 साड़ी व शॉल ओढ़ा कर सम्मानित कर एक हजार फलदार व इमारती पौधों का निःशुल्क वितरण किया। कार्यक्रम का संचालन गणेश सिंह ने किया।

मौके पर बृजमोहन सिंह, सुचित कुमार, बालगोविंद सिंह, विनोद यादव, दुखत भुइयां, श्यामदेव सिंह, विनोद सिंह, मनोज यादव, शमीम अंसारी, बाबूराम, शिव नारायण सिंह, जकीना बीबी, रजमतिया देवी, कुंती देवी, सैलो देवी, दुलारी देवी, फुलवा देवी समेत हजारों ग्रामीण मौजूद थे।

हिन्दुस्तान • रांची • रविवार • 30 अगस्त 2015 04

30·8·15

राखी मूवमेंट के अगुआ और विश्वव्यापी पर्यावरण अभियान के केन्द्रीय अध्यक्ष कौशल किशोर जायसवाल ने की पहल

बेलवाटांड़ में रक्षासूत बांध पेड़ों को बचाने का संकल्प

विश्रामपुर | प्रतिनिधि

राखी मूवमेंट के अगुआ और विश्वव्यापी पर्यावरण अभियान के केन्द्रीय अध्यक्ष कौशल किशोर जायसवाल ने रक्षाबंधन के अवसर पर डाली पंचायत के बेलवाटांड में रक्षसूत बांध पेड़ों को बचाने का संकल्प लिया।

ग्रामीणों और वन बचाओ अभियान में जुटे महिला-पुरुषों ने भी पेड़ों पर रक्षासूत्र बांधकर उसकी रक्षा का संकल्प दोहराया। वहीं पौधे लगाकर कार्यक्रम की शुरुआत की।

मौके पर डाली पंचायत के मुखिया अमित जायसवाल समेत सैकड़ों ग्रामीण उपस्थित थे। जायसवाल ने ग्रामीणों को पौधों की सुरक्षा और उससे होने वाले फायदे के विषय में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने

वन बचाओ अभियान

- वन बचाओ अभियान में सैकड़ों ग्रामीणों की भागीदारी रही
- पेड़ों को लगाने और उसकी सुरक्षा पर भी ध्यान देने का आह्वान

कहा पेड़ों कि सुरक्षा केवल लाठी से ही नहीं, राखी से भी हो सकता है। जिस तरह बहन अपनी भाई की कलाई में रक्षासूत्र बांधकर उससे अपनी सुरक्षा की कुशल कामना करती हैं, उसी प्रकार रक्षाबंधन के त्योहार पर पेड़ों पर रक्षासूत्र बांधकर हम उसकी रक्षा का संकल्प लेते हैं।

पर्यावरणविद कौशल ने कहा कि हमारी भारतीय संस्कृति पेड़ों की पूजा करने की रही है। जब हम उसकी पूजा करते हैं, तो उसे नष्ट करने का अधिकार हमारे पास नहीं बचता है।

शनिवार को बेलवाटांड़ में रक्षासूत बांध पेड़ों को बचाने का संकल्प दिलाते पर्यावरणविद कौशल किशोर जायसवाल। • हिन्दुस्तान

जायसवाल ने वन बचाओ अभियान में जुटे सैकड़ों महिला-पुरुषों को शॉल और साड़ी देकर सम्मानित कर उन्हें प्रोत्साहित किया। साथ ही सभी लोगों को कम-से-कम एक पौधे लगाने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन गणेश सिंह ने किया। कार्यक्रम में वृजमोहन सिंह, सूचित कुमार, बालगोविंद सिंह, किशोर यादव, जकीना बीबी, रजमतिया देवी, कुंती देवी, शैल देवी, दुलारी देवी, फुलवा देवी आदि शामिल थे।

पर्यावरणविद कौशल किशोर कोलकत्ता में सम्मानित

बैंक्विट हाल में अखिल भारतीय जायसवाल (सरवर्गीय) महासभा

कोलकत्ता : कोलकाता के ओपन बैंक्विट हॉल में 31 मार्च को अखिल भारतीय जायसवाल (सर्ववर्गीय) महासभा का अष्टम कार्यसमिति की आयोजित पंचम बैठक में समाज में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए पर्यावरणविद कौशल किशोर जायसवाल (झारखंड) को श्रेष्ठ सम्मान से नवाजा गया। पश्चिम बंगाल जायसवाल (सर्ववर्गीय) महासभा एवं युवा महासभा की ओर से आयोजित बैठक के बतौर मुख्य अतिथि राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा एवं उत्तर प्रदेश के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), बाल विकास एवं भूमि राजस्व मंत्री अनुपमा जायसवाल , महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रदीप जायसवाल , बड़ोदरा(गुजरात) राष्ट्रीय सचिव अशोक जायसवाल, इंदौर मध्य प्रदेश अजय जायसवाल, वरिष्ठ पत्रकार लखनऊ (उत्तर प्रदेश) अटल जयसवाल , कोयंबटूर तमिलनाडु पापा मोदी, महाराष्ट्र के मीना चौकसी, मध्य प्रदेश के रामविजय जायसवाल, गुवाहाटी आसाम एवं पश्चिम बंगाल के अध्यक्ष स्वरूप किशन जायसवाल, संयोजक राजेश जायसवाल, दिलीप जायसवाल समेत देशभर के दर्जनों राज्य से आए हुए

महासभा के पदाधिकारियों ने कार्यक्रम का उद्घाटन सामूहिक रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। सभी अतिथियों ने महासभा को मजबूत बनाने की अपील की। बैठक में समाज के गरीब बच्चों की पढ़ाई के लिए और समाज के लाचार और बीमार को मुफ्त में इलाज के लिए मदद करने के लिए महासभा में निर्णय लिया गया। इस कार्य के लिए एक और नया अकाउंट खोलकर उसमें लगभग 5 लाख रुपए जमा भी किए गए। बैठक में महासभा की ओर से विभिन्न राज्य से आए हुए सामाजिक कार्यकताओं को सम्मानित किया गया। जिसमें उत्तर प्रदेश के मंत्री अनुपमा जायसवाल, राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रदीप जायसवाल, राष्ट्रीय सचिव अशोक जायसवाल, मीना चौकसी, विशाल जयसवाल ने पर्यावरण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए सर्वश्रेष्ठ सम्मान से राष्ट्रीय अध्यक्ष पर्यावरणविद कौशल किशोर जायसवाल को सम्मानित किया गया। इस मौके पर श्री जायसवाल की धर्मपत्नी एवं संस्था के प्रधान महासचिव पूनम जायसवाल भी उपस्थित थी।

दिलायी पर्यावरण धर्म की शपथ

वन राखी मूवमेंट के प्रणेता पर्यावरणविद कौशल किशोर जायसवाल ने उपस्थित लोगों को पर्यावरण धर्म के आठ मूल मंत्रों की शपथ दिलाते हुए कहा कि इस वर्ष का दूसरा और जीवन का 34 वां पुरुस्कार उन्हें कोलकत्ता में प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि पुरस्कार से मिली हुए राशि को वे हमेशा गरीबों के बीच वितरीत कर देते है। श्री जायसवाल ने कहा कि वे पिछले 52 वर्षों मैं नेपाल भूटान समेत देश के 18 राज्यों के 70 जिलों मैं अभियान चलाकर 37 लाख पौधे का निःशुल्क वितरण किया है। यही कारण है कि उनकी जीवनी पर आधारित पढ़ाई सीबीएसई बोर्ड की कक्षा आठ एवं आईसीएसई बोर्ड की कक्षा छह में झारखंड मैन ऑफ दी मिशन कौशल किशोर जायसवाल के नाम से पिछले एक दशक से हो रही हैं। कार्यक्रम के दौरान श्री कौशल के कार्यों और व्यक्तित्व से प्रभावित होकर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रदीप जायसवाल ने गुजरात के अहमदाबाद में आने को न्योता उन्हें दिया है। मौके पर पूरे भारतवर्ष से आये महासभा के पदाधिकारी और गणमान्य लोग शामिल थे।

रांची, बुधवार 04
09.08.2017

84 लाख जीवों के लिए वनराखी मूवमेंट जरूरी

राखी बांधते पर्यावरणविद कौशल व अन्य.

- चेगौना धाम स्थित वनों में मनाया गया रक्षा बंधन का उत्सव

प्रतिनिधि ▸ नावाबाजार

वनराखी मूवमेंट के 40 वर्ष पूरा होने पर ...वार को चेगौनाधाम स्थित वनों के वृक्षों में राखी बांधी गयी. इसके बाद पर्यावरण गोष्ठी का आयोजन किया गया. इसका उदघाटन विश्वव्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान के केंद्रीय अध्यक्ष सह वनराखी मूवमेंट के प्रणेता कौशल किशोर जायसवाल ने वृक्षों में राखी बांधकर की. समारोह की अध्यक्षता डाली पंचायत के मुखिया अमित कुमार जायसवाल ने किया. मौके पर पर्यावरणविद श्री जायसवाल ने कहा कि रक्षा बंधन के दिन बहनें अपने भाई को राखी बांधकर लंबी उम्र की कामना करती है. उसी तरह आज सभी लोगों को वृक्षों में राखी बांधकर वृक्ष की लंबी उम्र की कामना करने की जरूरत है. उन्होंने कहा कि वे 1977 में वनराखी मूवमेंट की शुरुआत की थी. पहली बार डाली के केरकी गांव में वृक्षों में राखी बांधकर उसकी रक्षा का संकल्प लिया गया था. इसके बाद प्रत्येक साल यह कार्यक्रम चलाया जा रहा है. पिछले 40 वर्षों से वृक्षों को भाई मानकर वे राखी बांधकर वनों की लंबी उम्र की कामना कर रहे है.क्योंकि भाई भले धोखा दे सकता है, लेकिन वृक्ष कभी नहीं धोखा देंगे. उन्होंने कहा कि वनों की सुरक्षा केवल लाठी से नहीं की जा सकती है. जब तक वनों के प्रति अपनापन के भाव नहीं जगेगा, तब तक वन को बचाना संभव नहीं है. अपनापन का भाव जगाने के लिए ही पर्यावरण धर्म को अपनाने व वृक्षों में राखी बांधने की परंपरा की शुरुआत उन्होंने की थी. पर्यावरणविद श्री कौशल ने कहा कि पृथ्वी पर लगभग 84 लाख जीव है. उन्हें बचाने के लिए वनराखी मूवमेंट को अपनाना जरूरी है. मुखिया अमित कुमार जायसवाल ने कहा कि पौधरोपण के साथ-साथ वृक्षों का संरक्षण जरूरी है. उन्होंने कहा कि वनों के प्रति लोगों में अपनापन का भाव जगाने की जरूरत है. उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन से लोगों में वनों के सुरक्षा के प्रति जागरूकता आयेगी. कार्यक्रम में वनों को बचाने में महती भूमिका निभाने वाले कई लोगों को पर्यावरणविद् कौशल किशोर जायसवाल ने सम्मानित किया. मौके पर जिप सदस्य राजकुमार सिंह, उप मुखिया अफजल अंसारी, मीर परवेज अख्तर, सुजीत कुमार, जुबैर अंसारी, लल्लू प्रसाद, नजमुद्दीन अंसारी, रामजन्म यादव, पूर्णिमा कुमारी, टुटु कुमारी,कल्पना देवी, गीता देवी, रुबी कुमारी, रेशम कुमारी सहित कई लोग मौजूद थे.

प्रभात खबर 03.08.2017 06

पौधरोपण व वनों का संरक्षण जरूरी

- डाली में पर्यावरण विद कौशल किशोर जायसवाल ने किया 10 हजार पौधो का नि:शुल्क वितरण

प्रतिनिधि ▸ नावाबाजार,पलामू

छत्तरपुर प्रखंड की डाली पंचायत के कौशल नगर में विश्वव्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान के केंद्रीय अध्यक्ष सह वनराखी मूवमेंट के प्रणेता कौशल किशोर जायसवाल ने 10 हजार पौधों का निःशुक्ल वितरण किया. पौधा वितरण की शुरुआत सत्तारूढ दल के मुख्य सचेतक सह विधायक राधाकृष्ण किशोर ने बाजार परिसर में पीपल का पौधा लगाकर किया. कार्यक्रम की अध्यक्षता पंचायत की मुखिया अमित कुमार जायसवाल ने की. मौके पर विधायक श्री किशोर ने कहा कि पर्यावरण विद कौशल किशोर जायसवाल ने 50 वर्षों तक समाज को जो दिया वह अनमोल है. इनके कार्यों से अन्य लोगों को भी प्रेरणा लेने की जरूरत है. उन्होंने कहा कि आज दिन प्रतिदिन वन का क्षेत्रफल घट रहा है वह भविष्य के लिए शुभ संकेत नहीं है. जिंदा रहने के लिए पौधारोपण व वृक्षों का संरक्षण करना बहुत ही जरूरी है. इसके लिए सभी लोगों को जागरूक होने की जरूरत है. विधायक श्री किशोर ने कहा कि विकास के लिए आधारभूत संरचना का विकास जरूरी है, लेकिन पर्यावरण में संतुलन बनाकर विकास हो ऐसी व्यवस्था करने की जरूरत है. वृक्ष शुद्ध हवा देने में जात-पात धर्म नहीं देखता है वैसे ही हम लोगों को भी, खासकर राजनीतिक दल के लोगों को चाहिए कि वे सभी लोगों को सम्मानभाव से देखें. उन्होंने कहा कि यदि हम प्रकृति के साथ खता करेंगे तो प्रकृति हम से वफा नहीं खता ही करेगी. इसका परिणाम हम भुगत रहें है. पर्यावरण संरक्षण अभियान के केंद्रीय अध्यक्ष कौशल किशोर जायसवाल ने कहा कि आने वाली पीढ़ी को स्वस्थ देखना चाहते हैं तो वृक्षों का संरक्षण व संवेदनशील होना होग... वृक्षों को अपने बच्चों की तरह देखभा... करना होगा. क्योंकि वृक्ष बुढ़ापे व... सहारा बन सकता है. जब कोई सा... नहीं देगा तो उस समय वृक्ष ही सहा... बनेगा. पर्यावरणविद श्री जायसवाल ... कहा कि वनों को सुरक्षा लाठी नहीं राख... से होगी. उन्होंने लोगों से वृक्ष खेती कर... की अपील की. इस मौके पर जिप सदस्... राजकुमार सिंह, भाजपा नेता प्रशां... किशोर, उपमुखिया अफजल अंसारी किशुनपुर मंडल के भाजयुमो अध्यक्ष राजीव रंजन उपाध्याय, पाटन के संज... सिंह, भाजपा नेता जमालुद्दीन खां मीरप्रवेज अख्तर, अंजीमुद्दीन अंसारी सुजीत जायसवाल, जुबैर अंसारी सहित कई लोग मौजूद थे.

हिन्दुस्तान • रांची • सोमवार •25 सितंबर 2017 04

9·8·17

आठ मूल मंत्रों की दिलाई गई शपथ

मेदिनीनगर। जिले के छतरपुर अनुमंडल स्थित डाली पंचायत स्थित उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय परिसर में रविवार को गोष्ठी कर पर्यावरण धर्म की चर्चा की गई। गोष्ठी का उदघाटन विश्वव्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान के केन्द्रीय अध्यक्ष सह पर्यावरण धर्म और वनराखी मूवमेंट के प्रणेता कौशल किशोर जायसवाल ने पेड़ लगा कर किया। इसके बाद राष्ट्रीय गान गाया गया। इस क्रम में केंद्रीय अध्यक्ष ने पर्यावरण धर्म के आठ मूल मंत्रों की शपथ दिलाते हुए कहा कि देश को अंग्रेजी हुकूमत से आजादी मिली परंतु प्रदूषण संकट से देश के 125 करोड़ लोगों पर खतरा मंडरा रहा है। इस दुश्मन को पराजित करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण धर्म अपनाना होगा। तभी खुद और आनेवाली पीढ़ी को सुरक्षित किया जा सकता है। वरना साथ में आक्सिजन सिलिंडर लेकर चलना मजबूरी हो जाएगी। उल्लेखनीय है कि डाली बाजार में 500 पौधा और 1000 पेड़ जिसकी ऊँचाई 12 से 15 तक है निःशुल्क लगाया जा चुका है। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए डाली के मुखिया सह युवा भाजपा नेता अमित कुमार जायसवाल ने कहा कि वृक्षों से प्राण वायु मिलती है जिसकी जरूरत धरती के सभी जीवों को है।

दैनिक जागरण

I, गिरफ्तारी की मांग 13 'बैंक चोर' में कपिल की जगह होंगे रितेश देशमु

झारखंड • बिहार • पश्चिम बंगाल • उत्तर प्रदेश • दिल्ली • मध्य प्रदेश • हरियाणा • उत्तराखण्ड • पंजाब • जम्मू-कश्मीर • हिमा

11.1.13

राजधानी जागरण

www.jagran.com

वनराखी है आंदोलन, पर्यावरण संरक्षण मिशन

- पलामू के कौशल किशोर का पर्यावरण के लिए सबकुछ समर्पित
- अबतक 27 लाख पौधों का किया है निश्शुल्क वितरण
- 16 राज्यों के 32 जिलों में वनों की रक्षा के लिए कर रहे काम

त्रिभुवन सिन्हा, रांची

मध्यम कद, सावला रंग, आंखों में चमक। आत्मविश्वास से भरा चलने का अंदाज। ये हैं पलामू जिले के डाली गांव के कौशल किशोर जायसवाल। अपने को मानते हैं एक सिपाही, जिसका दायित्व है वन और पर्यावरण की रक्षा करना। धर्म पर्यावरण और मिशन पर्यावरण संरक्षण।

कौशल किशोर का जन्म 1957 में हुआ था। जब वे करीब 10 वर्ष के थे तो पलामू क्षेत्र में महा अकाल पड़ा। उस समय उनके पिता मोहन लाल खुर्जा ने कहा कि जंगलों की कटाई के कारण यह अकाल पड़ा है। उस छोटी उम्र में ही उन्होंने निश्चय कर लिया कि किसी भी कीमत पर जंगलों को बचाना होगा। जंगलों की कटाई रोकनी होगी और कटे जंगल की भरपाई के लिए पौधरोपण करना होगा। उम्र छोटी थी, जंगल की कटाई रोकने में असमर्थ थे। इसलिए अपनी पैतृक भूमि पर ही खुद पैसे का जुगाड़ कर बंजर जमीन पर पौधरोपण किया। चारों ओर नाली भी बनाई कि पानी टिका रहे। कुछ दिनों बाद ये पौधे लहलहाने लगे और कालांतर में वन की शक्ल में तब्दील हो गए।

पलामू में वृक्षों को राखी बांधते कौशल, उनकी पत्नी व अन्य।

कौशल किशोर

हर वर्ष खर्च करते 3 लाख

कौशल ने विश्वव्यापी पर्यावरण सरक्षण अभियान के अलावा पानी पचायत, वृद्धा आश्रम, लावारिस सेवा केंद्र जैसी संस्थाओं की भी स्थापना की है, जिससे कि गरीब किसानों को सहायता मिल सके। वे हर वर्ष स्वय करीब तीन लाख रुपये खर्च करते है। उनके इस कार्य मे उनकी माता पार्वती देवी, पिता मोहन लाल खुर्जा, पत्नी पूनम जायसवाल, पुत्र अरुण व अमित और पुत्री ज्योति का भी योगदान रहा। वर्ष 2013 मे कौशल ने सकल्प लिया कि पर्यावरण धर्म का प्रचार करते हुए वे पशुपति (काठमांडू, नेपाल) से तिरुपति (आध्र प्रदेश, भारत) तक दो लाख पौधे निश्शुल्क बाटेंगे।

मिले कई सम्मान

उनके कार्यों के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए सीबीएसइ की आठवीं कक्षा की पुस्तक 'न्यू फाइंड आउट' में उन्हें पर्यावरणविद के रूप में जगह दी गई है। आइसीएसइ की छठी कक्षा की पुस्तक 'ट्रेजर चेस्ट' में इनका जिक्र 'मैन ऑन मिशन' के रूप में किया गया है। पर्यावरण संरक्षण के लिए किए गए इनके कामों को देखते हुए झारखंड के तत्कालीन उपमुख्यमंत्री सुधीर महतो, तत्कालीन विस अध्यक्ष सीपी सिंह, पीसीसीएफ सीआर सहाय ने भी इन्हें सम्मानित किया है। राज्यपाल डॉ. सैयद अहमद ने भी वर्ष 2012 में इन्हें सम्मानित किया। भारत सरकार के पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने उनके कार्यों को एक ब्राउशर में समाहित किया।

1976 से शुरू हुआ अभियान

1976 मे वनो की कटाई रोकने के लिए कौशल वनराखी आदोलन की शुरुआत की। उनका कहना है, 'वनों की सुरक्षा लाठी से नहीं, राखी से होगी।' उन्होंने लोगों को बताया कि वृक्षों को राखी बाधे और उसे कटने से बचाएं। धीरे-धीरे लोग इस आदोलन मे शामिल होते गए और जगलो की रक्षा के लिए एक कारवा निकल पडा। उन्होंने पौधरोपण के लिए भी लोगो को प्रेरित किया और शिविर लगाकर पौधों का निश्शुल्क वितरण किया।

27.5 लाख पौधों का वितरण

अभियान के तहत अबतक करीब साढे सत्ताइस लाख पौधो का वितरण हो चुका है। उन्होंने भूगर्भ जलस्तर को उचित स्तर पर बनाए रखने के लिए पलामू क्षेत्र मे कई नाले और बाध भी बनवाए। उनके वनराखी और पौधरोपण आदोलन से आज रेन शैडो एरिया मे होने के बावजूद पलामू प्रमंडल मे हरियाली है।

कारवां बढ़ता गया

छोटे से इलाके से चला कारवा 16 राज्यों के 32 जिलों मे फैल चुका है। कौशल ने अपने खर्चे पर झारखंड के रांची, लोहरदगा, सिमडेगा, गुमला, पलामू, लातेहार, गढवा, जमशेदपुर, चतरा, धनबाद मे वन लगाने के लिए पोधो का वितरण किया है। इसके अलावा बिहार के गया व पटना, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक आदि राज्यों सहित भूटान और नेपाल के काठमाडू म पोधो के वितरण के लिए शिविर का आयोजन किया। उन्होंने वैसे पोधो का भी वितरण किया, जो आय में बढ़ोतरी के साधन बन सकते है।

नों की रक्षा का लिया संकल्प

राखी बांधकर उम्र की कामना

संवाददाता

...लामू : डाली बाजार मोड़ के वनों में वनराखी मूवमेंट ...वर्ष पूरा होने पर प्रति वर्ष ...ति इस वर्ष भी वनों पर रक्षा ...र्यावरण धर्म पर गोष्ठी का ...न किया गया। कार्यक्रम का ... विश्वव्यापी पर्यावरण ... अभियान के केंद्रीय अध्यक्ष ...ण धर्म व वनराखी मूवमेंट अगुआ कौशल किशोर ... ने वनों पर राखी बांधकर ... मौके पर श्री जायसवाल ने ...श्रावन पूर्णिमा के अवसर ...भी बहन अपने भाइयों की ...पर राखी बांधकर भाइयों ...लंबी उम्र की कामना करती है। ...त 40 वर्ष से जीवन रूपी वन वृक्षों भाई कोमानकर राखी बांधकर वनों की लंबी उम्र की कामना करता हूं। कौशल ने वनों की बचाने के लिए शपथ दिलाया। कहा कि वनों के कई उपकार मिट्टी, पानी और बयार। इन सभी के रहने का आधार वन वदि है तभी हम हैं। वन नष्ट हो गये तो धरती पर 84 लाख जीवों का सफाया होगा। वनों की सुरक्षा केवल लाठी से नहीं वनराखी से होगी। जिंदा रहना है तो वन बचायें पौधा लगायें। श्री जायसवाल ने कहा कि पर्यावरण धर्म के तहत वनराखी मूवमेंट का शुरूआत 1977 में किया था। 1967 में लगाये गये पौधे वृक्ष के रूप में कटने लगे। सरकार वनों को नीलामी के द्वारा कटवाता रहा। इन्हें रोकने के लिए 1977 में पहली बार पंचायत डाली बाजार के केकड़ी गांव में वनों पर राखी बांधकर महिलाओं को इसमें आगे किया और लगाये गये पौधे वृक्ष के रूप में और वनों को कटने से रोकने का उपाय किया। उन्होंने कहा कि वनराखी मूवमेंट के 40 वर्ष में अभियान फैलकर नेपाल-भूटान समेत देश के 18 राज्य के 70 जिलों में लगभग 55 हजार राखी की वन वृक्षों पर बांध व बंधवाया। वनराखी मूवमेंट में शामिल महिलाओं व पुरुषों को लगभग 15 हजार कैलेंडर, साड़ी व शील देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डाली बाजार के मुखिया सह भाजपा नेता अमित कुमार जायसवाल ने कहा कि 40 वर्ष पूर्व से वनराखी मूवमेंट चला रहे व 50 वर्षों से निजी खर्च पर निःशुल्क पौधा वितरण व रोपन करना कठिन नहीं है। सभी लोगों ने जायसवाल के कार्य की सराहना। कार्यक्रम में जिला पार्षद राज कुमार सिंह, उप मुखिया अफजल अंसारी, मीर परवेज अख्तर, सुमित कुमार, जुबैर अंसारी, लल्लू प्रसाद, नजमुद्दीन अंसारी, रामजन्म यादव, पुनिया कुमारी, गुड्डू कुमारी, अल्पना देवी, गीता देवी, कलावती देवी, रूबी कुमारी, रश्मी कुमारी समेत ग्रामीण जनता उपस्थित थे।

9.8.17

रक्षासूत्र बांधकर करें वनों की दीर्घायु की कामना : कौशल

संवाद सूत्र, मेदिनीनगर : पेड़ों व वनों को भाई मानते हुए रक्षासूत्र बांधकर लंबी उम्र की कामना करनी चाहिए। ऐसा करने से संपूर्ण जगत का कल्याण होगा। ये बातें वनराखी मूवमेंट के प्रणेता पर्यावरणविद कौशल किशोर जायसवाल ने कही। वे रक्षाबंधन के अवसर पर छतरपुर के डाली बाजार मोड़ स्थित चेगौना वन क्षेत्र में पेड़ों पर राखी बांधने के बाद आयोजित कार्यक्रम में बोल रहे थे।

कहा कि देश की बहनें अपने भाई की कलाईयों पर राखी बांधकर उनकी लंबी उम्र की कामना करती हैं। ठीक उसी प्रकार पेड़ों को भाई मानकर उसकी लंबी उम्र की कामना करनी चाहिए। कहा कि वे पिछले 40 वर्ष से जीवन रूपी वृक्षों को भाई मानकर राखी बांधकर वनों की लंबी उम्र की कामना करते आ रहे हैं। इस अवसर पर पर्यावरणविद कौशल किशोर जायसवाल ने वनों को बचाने की शपथ दिलाई। कहा कि वनों के हैं कई उपकार मिट्टी पानी और बयार। मिट्टी पानी और बयार जिंदा रहने के आधार। कहा कि वन हैं तभी जीव हैं। वन नष्ट होने पर धरती के 84 लाख जीवों का सफाया हो जाएगा।

पेड़ों पर राखी बांधते पर्यावरणविद कौशल किशोर जायसवाल व अन्य • जागरण

कहा कि वनों की सुरक्षा लाठी से नहीं वन राखी से होगी। जिंदा रहना है तो वन बचाएं और पौधे लगाएं। इस अवसर पर डाली बाजार के मुखिया सह भाजपा नेता अमित कुमार जायसवाल ने कहा कि पर्यावरणविद कौशल किशोर ने पर्यावरण की सुरक्षा के लिए 40 वर्षों से लोगों के बीच निःशुल्क पौधा वितरण का कार्य कराया है यह उल्लेखनीय है। इस अवसर पर जिला पार्षद राज कुमार सिंह, उप मुखिया अफजल अंसारी, मीर परवेज अख्तर, सुमित कुमार, जुबैर अंसारी, लल्लू प्रसाद, नजमुद्दीन अंसारी, रामजन्म यादव, गुड्डू कुमारी, अल्पना देवी, गीता देवी, कलावती देवी, रूबी कुमारी, रश्मी कुमारी, पूर्णिमा कुमारी आदि ने वनराखी कार्यक्रम में भाग लिया।

जज्बा

निजी खर्च कर लगाए 34 लाख पौधे, पर्यावरणविद कौशल किशोर जायसवाल ने पर्यावरण संरक्षण पेश किया मिसाल

पौधरोपण का 50वां व वनराखी मूवमेंट का 40वां वर्ष पूरा

विश्व पर्यावरण दिवस

पेड़ों को राखी बांधते पर्यावरणविद कौशल किशोर जायसवाल • जागरण

सूत्र, मेदिनीनगर : विश्वव्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान के केंद्रीय ..., वनराखी मूवमेंट के अगुआ पर्यावरण विद कौशल किशोर जायसवाल पर्यावरण के सजग प्रहरी हैं। ... अवस्था से पौधे लगाने व वितरण ... में अपना सबकुछ दाव पर लगा ... करते थे। कौशल किशोर 5 जून पर्यावरण दिवस पर निःशुल्क पौधा ... सह रोपन कार्य का 50वां वर्ष व पर्यावरण धर्म एवं वनराखी मूवमेंट का ... वर्ष पूरा किया है।

नेपाल के पशुपति से आंध्र प्रदेश तिरूपति होते हुए कर्नाटक के उत्तर कन्नड़ जिला के सालखन्नी में अभियान समाप्त करने का लक्ष्य रखा है। ... ने बताया कि अभियान में प्रत्येक वर्ष की भांति दो लाख पौधों का निशुल्क वितरण व रोपन, पर्यावरण धर्म के आठ मंत्रों के साथ-साथ पर्यावरण धर्म पर ... व पेड़ों पर रक्षा बंधन अभियान चलाया जाएगा। 1957 में जन्मे कौशल किशोर पलामू जिले के छतरपुर प्रखंड स्थित डाली गांव के निवासी हैं। 1967-68 में पहली बार अपने पूर्वजों की 7.72 हेक्टेयर भूमि पर पौधा लगाया। वह आज जंगल के रूप में देखने योग्य है साथ ही किसानों को पौधा लगाने के लिए प्रेरित किया। उस समय किसान अपनी रैयती भूमि पर जंगल लगाने से डरते थे। ग्रामीण समझते थे कि लोगों की भूमि सरकार ले लेगी। वे सभी को समझा कर पौधा लगवाया। कौशल किशोर ने 1977 में पर्यावरण धर्म के तहत वनराखी मूवमेंट को चलाया। उनके लगाए गए पौधे वृक्ष के रूप में कटने लगे।

सरकार वनों की निलामी के माध्यम से जंगल कटते रहे। पेड़ों को कटने से रोकने के लिए उन्होंने महिलाओं को अभियान में शामिल कर वनों पर राखी बंधन अभियान चलाकर वनों को राखी बांधकर अभियान चलाकर वनों को राखी बांधकर भाई-बहन का रिश्ता बनाया और वनों को कटने से रोका। वनों की निलामी कार्य बंद हो गया। कौशल ने 2000 ई. से 15 से 20 हजार पौधों को साप्ताहिक बाजार में शिविर लगाकर पौधों का वितरण करते आ रहे हैं। साथ ही वन बचाने का संकल्प दिलाते हैं। अब तक वे सीसीएसएस, पानी पंचायत, पर्यावरण धर्म, प्रकृति की ओर लौटें आंदोलन एवं स्वावलंबी सेवा केंद्र जैसी संस्था स्थापना कर चुके हैं। वे अपने निजी खर्च पर अब तक चलाते आ रहे हैं। उनकी पत्नी पूनम जायसवाल व्यवसायिक पुत्र अरूण कुमार एवं मुखिया पुत्र अमित कुमार, शिक्षिका पुत्री ज्योति का अहम सहयोग मिलता है। इन संस्थाओं का उद्घाटन ख्यात पर्यावरणविद सुंदर लाल बहुगुणा एवं तत्कालीन मुख्यमंत्री ने किया है।

राज्यपाल व मुख्यमंत्री ने भी किया है सम्मानित

पर्यावरण के क्षेत्र में हरियाली के लिए क्रांति पैदा करने वाले पर्यावरणविद कौशल किशोर जायसवाल को झारखंड के राज्यपाल, मुख्यमंत्री, विधानसभा अध्यक्ष, डीजीपी, पर्यावरणविद सुंदरलाल बहुगुणा, नेपाल के ... आदि ने सम्मानित किया है। ... बोर्ड के ... और ... के ... ने झारखंड ... किशोर जायसवाल की ... की पढ़ाई ... वर्षों से हो रही है।

अब तक 50 वर्षों में 35 लाख पौधा वितरण सह रोपण व वनराखी मूवमेंट में शामिल जंगल बचाने वाले लाखों महिला-पुरूष को साड़ी, कंबल व शाल देकर सम्मानित किया गया। इससे हजारों एकड़ जंगल बचाई गई। साथ ही सैकड़ों एकड़ भूमि पर पौधे लगाए गए। कौशल किशोर ने तीसरा विश्वयुद्ध जल संकट टालने व पृथ्वी पर बढ़ते तापमान एवं प्रदूषण पर काबू पाने के उद्देश्य से पर्यावरण धर्म के आठ मूल मंत्र जैसे जन्म दिन पर पौधा लगाकर बचाना, जन, जल, जंगल, जमीन, जानवर, पक्षी एवं प्रकृति को बचाने का उद्देश्य है। पलामू एक अजीब तीसरी जोन है। यह भारत का सबसे भीषण गर्मी पड़ने वाले तीन जिलों में से एक पलामू भी है। चार जून को ही पलामू का तापमान 4.9 डिग्री सेल्सियस रहा। पर्यावरणविद कौशल किशोर का कहना है कि प्रदूषण की आग विश्व में लगी है। जिसे पानी से नहीं वृक्षों से निकलने वाली शुद्ध हवा से बुझेगी।

2 दैनिक जागरण रांची, 5 जून 2017

एक नजर

10 रांची, सोमवार, 5 जून 2017 www.pmedia.in

सन्मार्ग

कौशल ने निजी खर्च से लगाये 35 लाख पौधे

संवाददाता

मेदिनीनगर : कौशल किशोर जायसवाल ने 5 जनू पर्यावरण दिवस पर निःशुल्क पौधा वितरण सह रोपन कार्य का 50वां साल तथा पर्यावरण धर्म एवं वनराखी मूवमेंट के 40वां साल पूरा किया। इस अवसर पर वे नेपाल के पशुपति से आन्ध्र प्रदेश के तिरूपति होते हुए कर्नाटक के उत्तर कन्नड़ जिला के सालखन्नी में अभियान को समाप्त करने का लक्ष्य रखा है। श्री जायसवाल ने बताया कि इस अभियान में प्रत्येक वर्ष की भांति दो लाख पौधों का निःशुल्क वितरण व रोपन एवं पर्यावरण धर्म पर गोष्ठी एवं वनों पर रक्षा बंधन अभियान चलायेंगे। श्री जायसवाल ने 1977 ई. में पर्यावरण धर्म के तहत वनराखी मूवमेंट को चलाया। क्योंकि उनके द्वारा लगाये गये पौधे वृक्ष के रूप में कटने लगे तथा सरकार द्वारा वनों की निलामी के माध्यम से जंगल कटते रहे। पेड़ों को कटने से रोकने के लिए उन्होंने महिलाओं को अभियान में शामिल कर वनों पर राखी बंधन अभियान चला कर वनों को राखी बांधकर भाई-बहन का रिश्ता बनाया और वनों को कटने से रोका। इस कारण वनों की निलामी कार्य बंद हो गया।

श्री जायसवाल ने 2000 ई. से अब तक 50वां वर्षों में 35 लाख पौधा वितरण सह रोपन तथा वनराखी मूवमेंट में शामिल जंगल बचाने वाले लाखों-पुरूष को साड़ी, कम्बल एवं शॉल देकर सम्मानित किया गया। जिससे हजारों एकड़ जंगल बचाई गई है तथा सैकड़ों एकड़ भूमि पर पौधा लगाया है। श्री जायसवाल का कहना है कि प्रदुषण की आग विश्व में लगी है। जिसे पानी से नहीं वृक्षों से निकलने वाली शुद्ध हवा से बुझेगी, क्योंकि वृक्ष और भगवान शिव दोनों ही विष पिते है। वनों की सुरक्षा केवल लाठी से नहीं वनराखी से होगी। लोगों को शहर में आकाश बाग, किचन प्लांट एवं गांव में वृक्ष खेती से प्रदुषण पर काबू पा सकते है। उन्होंने पर्यावरण के साथ-साथ समाजिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया है। जैसे लड़कियों की शादी में अनाज और नकद तथा अनाथ बच्चों और दुर्घटनाग्रस्त लोगों के साथ-साथ लाचार एवं बीमार लोगों की मदद करते है। इनका सभी कार्य निजी स्तर पर करते है। 50वीं वर्षगांठ पर उन्होंने केन्द्रीय मंत्री एवं पर्यावरणविद मेनका गांधी एवं मुख्यमंत्री रघुवर दास को आमंत्रित किया है।

5.6.17

मेदिनीनगर
web www.khabarmantra.com
17 रांची, बुधवार 9 अगस्त 2017

84 लाख जीवों को बचाना है तो वनराखी मूवमेंट को अपनाना होगा: कौशल किशोर

वृक्षों में राखी बांध की लंबी उम्र की कामना, वन बचाने की दिलायी शपथ

संवाददाता

वृक्षों को राखी बांधकर बचाने की अपील करते कौशल किशोर व अन्य

छतरपुर पलामू। डाली बाजार मोड़ चेगौना के वनों में वनराखी मूवमेंट के 40वां वर्ष पूरा होने पर प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी वनों पर रक्षा बंधन व पर्यावरण धर्म पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन विश्वव्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान के केंद्रीय अध्यक्ष सह पर्यावरण धर्म व वनराखी मूवमेंट के अगुआ कौशल किशोल जायसवाल ने वनों पर राखी बांधकर किया। मौके पर उन्होंने कहा कि सावन पूर्णिमा के मौके पर सभी बहनें अपने भाइयों की कलाइयों पर राखी बांधकर भाइयों की लंबी उम्र की कामना करती है। परंतु मैं आज 40 वर्ष से जीवन रूपी वन वृक्षों को भाई मानकर राखी बांधकर वनों की लंबी उम्र की कामना करता हूं। उन्होंने वनों को बचाने के लिए शपथ दिलायी।

कहा कि वनों के कई उपकार मिट्टी, पानी और बयार। इन सभी के रहने का आधार वन यदि है तभी हम हैं। वन नष्ट हो गये तो धरती पर 84 लाख जीवों का सफाया होगा। वनों की सुरक्षा लाठी से नहीं वनराखी से होगी। जिंदा रहना है तो वन बचायें, पौधे लगायें। पर्यावरण धर्म के तहत वनराखी मूवमेंट की शुरुआत 1977 में हुई थी। 1967 में लगाये गये पौधे वृक्ष के रूप में कटने लगे। सरकार वनों को नीलामी से कटवाती रही। इन्हें रोकने के लिए 1977 में पहली बार पंचायत डाली बाजार के केरकी गांव में वनों पर राखी बांधकर महिलाओं को इसमें आगे किया और लगाये गये पौधे वृक्ष के रूप में और वनों को कटने से रोकने का उपाय किया। उन्होंने कहा कि वनराखी मूवमेंट के 40 वर्ष में अभियान चलाकर नेपाल-भूटान समेत देश के 18 राज्य के 70 जिलों में लगभग 55 हजार राखी को वन वृक्षों पर बांध व बंधवाया। वनराखी मूवमेंट में शामिल महिलाओं व पुरुषों को लगभग 25 हजार कंबल, साड़ी व शॉल देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डाली बाजार के मुखिया सह भाजपा नेता अमित कुमार जायसवाल ने कहा कि 40 वर्ष पूर्व से वनराखी मूवमेंट चला रहे व 50 वर्षों से निजी खर्च पर निःशुल्क पौधा वितरण व रोपण करना कठिन नहीं है। सभी लोगों ने जायसवाल के कार्य को सराहना। कार्यक्रम में जिला पार्षद राज कुमार सिंह, उप मुखिया अफजल अंसारी, मीर परवेज अख्तर, सुचित कुमार, जुबैर अंसारी, लाछु प्रसाद, नजमुदीन अंसारी, रामजन्म यादव, पूर्णिमा कुमारी, टुटु कुमारी, अल्पना देवी, गीता देवी, कलावती देवी, रूबी कुमारी, रेशमी कुमारी समेत ग्रामीण जनता उपस्थित थे।

03 हिन्दुस्तान • रांची • बुधवार • 09 अगस्त 2017

9·17

पर्यावरण गोष्ठी से लोगों को प्रेरित किया

वर्षगांठ मनी

मेदिनीनगर | संवाददाता

छतरपुर प्रखंड के चेगौना डाली मोड़ के पास वनराखी आंदोलन के तहत पेड़ों का रक्षासूत्र बांधते लोग। • हिन्दुस्तान

छतरपुर प्रखंड के चेगौना स्थित डाली मोड़ के पास हरे-भरे पेड़ों की काट लेने की समस्या का समाधान निकालने के लिए पर्यावरणविद् कौशल किशोर जायसवाल के नेतृत्व में वनराखी मूवमेंट की 40वीं वर्षगांठ के मौके पर पेड़ों को राखी बांधे गये।

ग्रामीण महिला-पुरुष और पंचायत प्रतिनिधियों के साथ कौशल किशोर जायसवाल ने खुद पेड़ों को राखी बांधी और उसका संरक्षण करने का संकल्प लेते हुए कहा कि पर्यावरण को अनुकूल रखकर ही अपना, समाज का, देश का और समग्र संसार का विकास किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि पर्यावरण को अनुकूल रखने के लिए पेड़ों की रक्षा करना अनिवार्य है। अगर वनों का दोहन किया जाये तो पौधारोपण अभियान चलाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी परंतु बेतरतीब तरीके से वनों का शोषण करने का परिणाम है कि आज पलामू जैसा क्षेत्र जहां करीब चार-पांच दशक पहले के रहने लायक सघन वन होता था आज अकाल और सुखाड़ की मार झेलने लगा है।

वनराखी आंदोलन

- पर्यावरणविद् कौशल किशोर का वनराखी आंदोलन जारी
- आंदोलन की 40वीं वर्षगांठ धूमधाम से मनाई गई

उन्होंने ग्रामीणों से जीवन में लकड़ी की आवश्यकता को महसूस करने का आग्रह करते हुए कहा कि अगर हम अपने जीवन में अपनी आवश्यकता के अनुरूप भी पेड़ तैयार कर लें तो प्रकृति को काफी सहयोग मिलेगा।

उन्होंने मिट्टी, पानी और वायु वनराखी के बाद आयोजित पर्यावरण गोष्ठी में डाली के मुखिया सह भाजपा नेता अमीत कुमार जायसवाल ने भी विषय रखा। उन्होंने कहा कि 40 सालों से वनराखी और 50 सालों से पौधारोपण सह वितरण कार्य निजी खर्च से चलाया जाना अनुकरणीय है, जिसे वे भी अपनी जीवन में आत्मसात करते हुए अन्य लोगों को भी प्रेरित करने का प्रयास कर रहे हैं।

मौके पर जिला पार्षद राजकुमार सिंह, उपमुखिया अफजल अंसारी, मीर परवेज अख्तर, सुचित कुमार, जुबैर अंसारी, लल्लू प्रसाद, नजमुद्दीन अंसारी, रूबी कुमारी, कलावती देवी आदि विशेष रूप से मौजूद थे।

रण रांची, 22 मार्च 2017 पलामू जागरण

राखी बांध लिया रक्षा का संकल्प

विश्व वानिकी दिवस पर पर्यावरण धर्म के आठ मूलमंत्र की दिलाई गई शपथ

संवाद सूत्र, मेदिनीनगर : किसान अब पौधे की खेती करें। इससे जीवन में हरियाली व खुशहाली दोनों आएगी। उक्त बातें विश्वव्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान के केंद्रीय अध्यक्ष कौशल किशोर जायसवाल ने कही। वे मंगलवार को नावा बाजार के कंडा वन में विश्व वानिकी दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में बोल रहे थे।

इस अवसर पर कौशल किशोर जायसवाल के नेतृत्व में पर्यावरण प्रेमियों ने वृक्षों पर राखी बांधी व वनों को बचाने का संकल्प लिया। साथ ही पर्यावरण धर्म के आठ मूलमंत्र की शपथ दिलाई। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जन्म दिन पर पौधे लगाएं। जल, जंगल, जमीन, जानवर, जन, पक्षी व प्रकृति बनाने व ग्रामीणों को जंगल में टांगी की जगह राखी ले जाने की सलाह दी।

उन्होंने कहा कि वन एवं वन्य प्राणी राष्ट्र की संपत्ति हैं। इसकी हिफाज़त केवल वन विभाग का दायित्व नहीं हम सभी का कर्तव्य भी है। कह कि वनों की सुरक्षा लाठी से नहीं वन राखी से होगी।

पेड़ों पर राखी बांधते पर्यावरणविद् कौशल किशोर जायसवाल • जागरण

पौधे लगाने व बचाने वाले सनातन धर्म मानने वाले को स्वर्ग व इस्लाम धर्म मानने वाले को जन्नत में जगह मिलती है। किसानों के लिए पौधे लगाना सबसे बढ़िया खेती है। पौधे लगाने से अकाल, सुखाड़ का भय नहीं होता। यह किसानों का फ़िक्स डिपोजिट राशि के समान है।

कहा कि पुत्र साथ छोड़ सकता है परंतु वृक्ष नहीं। कहा कि हरियाली के बिना खुशहाली की कामना कतई नहीं की जा सकती है। प्रकृति का रिमोट कंट्रोल जंगल है। ग्रामीणों से अपील की गई कि वह पेड़ों की रक्षा खुद करें और आसपास के लोगों को भी जागरूक करें। पेड़ों की रक्षा करना सबकी जिम्मेदारी है।

इस अवसर पर उन्होंने वन बचाने वाले ग्रामीणों को शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता निर्मल यादव, व संचालन जयराम सिंह ने किया। मौके पर जुबैर अंसारी, मीर परवेज अख्तर, सुचित कुमार, मीर आफताब, कारी साहब, इसराईल अंसारी, धर्मदेव पाल, देवेंद्र सिंह, रंगी भुइयां, सुनीता देवी, ललिता देवी, रिंकू देवी, पचिया देवी, चंपा देवी, कौशल्या देवी समेत बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

कार्यक्रम

- नावा बाजार प्रखंड स्थित कंडा के वन में हुआ कार्यक्रम का आयोजन
- पर्यावरण प्रेमी कौशल किशोर ने पेड़ों की रक्षा करने की दिलाई शपथ

22.3.17

03 हिन्दुस्तान • रांची • शुक्रवार • 17 फरवरी 2017

एनपीएस के सचिव ने राशि का किया गबन

मेदिनीनगर | प्रतिनिधि

जिले के छतरपुर प्रखंड की डाली पंचायत के ठेकही एनपीएस की बीइइओ के नेतृत्व में की गयी जांच में कई खामियां उजागर होने पर सचिव के विरुद्ध सरकारी राशि गबन करने संबंधित प्राथमिकी करने की अनुशंसा की गयी है।

जांच संबंधित मुखिया के करने के बाद बीइइओ के नेतृत्व में की गयी है। 25 जनवरी को डाली के मुखिया अमित कुमार ने 12 सदस्यों के साथ उक्त स्कूल की जांच ग्रामीणों की शिकायत पर की थी, तब वहां के सचिव और स्कूल प्रबंधन समिति के लोगों ने अपनी कमियों को छिपाने के लिए मुखिया के विरुद्ध ही झूठा आरोप मढ़ने का प्रयास किया।

जांच के दौरान रजिस्टर फाड़ने और धक्का मुक्की का आरोप मढ़ा था। जिले के वरीय अधिकारी के आदेश पर जांच में गए बीइइओ, जेई और बीपीओ ने अपनी जांच रिपोर्ट में स्पष्ट किया है कि सचिव ने भवन और शौचालय निर्माण की राशि समेत स्कूल रंग रोगन की राशि निकासी के बाद भी काम नहीं किया है। सरकारी राशि गबन करने, नियमित स्कूल नहीं करने और बच्चों को मिड डे मील नहीं देने समेत कई खामियां सामने आयी हैं। इसके अलावा और भी खामियां बताई गई हैं।

पर्यावरण धर्म को अपनायें वरना नहीं बचेगी पृथ्वी : कौशल किशोर

महिलाओं को मिला पर्यावरण का मूलमंत्र

संवाददाता

मेदिनीनगर: सावधान बड़ी दुर्घटना होनेवाली है ! जलसंकट, जिंदा रहना है तो प्रकृति से केवल लेना नहीं देना भी सीखें। पानी चाहिए तो पौधा लगायें व वन बचायें। नहीं तो पलामू प्रमंडलवासियों को भीषण गर्मी और पानी की किल्लत से तबाह होकर भागना पड़ेगा। उक्त बातें विश्वव्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान के केंद्रीय अध्यक्ष सह पर्यावरण धर्म व वनराखी मूवमेंट के प्रणेता कौशल किशोर जायसवाल ने कहीं। श्री जायसवाल छतरपुर के खोंगा वनों में 45वां पृथ्वी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के उद्घाटन में बोल रहे थे। उन्होंने कार्यक्रम का उद्घाटन वन वृक्षों पर रक्षा बंधन कर व पौधा लगाकर किया। मौके पर श्री जायसवाल ने कहा कि 47 वर्ष पूर्व मैंने कहा था कि तीसरा विश्व युद्ध जल संकट के रूप में होगा। 16 वर्ष पूर्व कहा था कि आज लोग बोतल में पानी लेकर चल रहे हैं आनेवाली पीढ़ी को ऑक्सीजन का सिलेंडर लेकर चलना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि यदि पर्यावरण धर्म के छह मूलमंत्र को नहीं अपनायें तो यह पलामू प्रमंडल एक ब्लैक शेडो जोन को परिवर्तित नहीं हुआ तो भीषण गर्मी एवं जल के किल्लत दूर नहीं

वन बचाने वाले महिलाओं को साड़ी व पुरूष को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया

होगा। लोग विवश होकर प्रमंडल को छोड़ दूसरे राज्य में जाना तय करेंगे। पर्यावरण धर्म के छह मूलमंत्र अपने जन्म दिन पर पौधा लगाना, जल, जमीन, जंगल, जानवरों को बचाना एवं प्रकृति उद्योग लगाकर हम ध्वनी प्रदूषण, वायु प्रदूषण, सामाजिक प्रदूषण एवं धार्मिक प्रदूषण पर काबू पा सकते है। श्री जायसवाल ने वन बचाने वाले सैकड़ों महिलाओं को साड़ी व पुरूष को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित कर पर्यावरण धर्म की मूल मंत्र की शपथ दिलायी। उन्होंने कहा कि मई में पांच हजार निःशुल्क पौधा

वितरण किये जायेंगे। डाली मुखिया सह भाजपा नेता अमित कुमार जायसवाल ने कहा कि जल की व्यवस्था भागीरथी जी ने मां गंगा को पृथ्वी पर उतारे थे। लेकिन आज हमलोग इसे नहीं बचा पा रहे हैं। हमलोगों को भागीरथी बनकर वर्षा के पानी को हर गांव में रोकना होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता मीर परवेज अख्तर व संचालन नंदू विश्वकर्मा ने किया। मौके पर श्रवण कुमार जायसवाल, शमीम अंसारी, संतोष प्रजापति, संजय भुइयां, कुलदीप बैगा, नरेश साव, रामअवतार पासवान, देवमनिया देवी, सुनरी देवी, फुलमनिया देवी, मुनी देवी, निर्मला देवी, प्रतिमा देवी, सरीता देवी समेत कई उपस्थित थीं।

5.6.16

...पास जागरण

...के लिए जरूरी

6 शनिवार 23 अप्रैल

जिंदा रहना है तो पेड़-पौधे लगाने होंगे : कौशल

- पृथ्वी दिवस पर हुआ कार्यक्रम
- पर्यावरण संरक्षण के लिए बेहतर काम करने वालों को कौशल ने किया पुरस्कृत
- वर्षा जल को गांव में ही रोकें : अमित

मेदिनीनगर : जिंदा रहना है तो पेड़-पौधे लगाने होंगे। बगैर पेड़-पौधे के जीवन की कल्पना नहीं हो सकती। आमजन को चेतने की जरूरत है। उक्त बातें पर्यावरणविद कौशल किशोर जायसवाल ने कही। वे शुक्रवार को छतरपुर के खोंगा वन में 45वां ...वी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बोल ... । इस अवसर पर कौशल किशोर ने ... त लोगों के साथ पेड़ों पर राखी बांध र पेड़ों को बचाने का कसम खिलाया। उन्होंने कहा कि आज लोग बोतल मे पानी लेकर चल रहे हैं। आने वाली पीढ़ी को आक्सीजन का सिलेंडर लेकर चलना पड़ेगा। कहा कि पर्यावरण के छह मूल मंत्र को अपनाना होगा। ऐसा नहीं होने पर पलामू प्रमंडल के लोगों को यहां से अन्यत्र पलायन करना होगा। कहा कि लोग अपने जन्म दिन पर पौधा लगाए, जल, जमीन, जंगल, जा... को बचाए, प्रकृति उद्योग लगाए, ... समाजिक व धर्मिक प्रदूषण पर ... तभी हरियाली व खुशहाली ... र अवसर पर डाली पंचायत के मुखिया सह भाजपा नेता अमित कुमार जायसवाल ने कहा कि जल की व्यवस्था भागीरथी जी ने मां गंगा को पृथ्वी पर उतार कर लाए थे। इस प्रकार गांव के लोगों को भी भागीरथी प्रयास कर वर्षा जल को गांव में रोकना होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता मीर परवेज अख्तर व संचालन नंदू विश्वकर्मा ने किया। इस अवसर पर श्रवण कुमार जायसवाल, सतोष प्रजापति, संजय भुईयां, कुलदीप बैगा, नरेश साव, श्रामअवधार पासवान, देवमनिया देवी, मुनरी देवी, फुलमनिया देवी, मु... देवी, संगीता देवी, निर्मला देवी, प्रतिमा ...ी, कलिया देवी, धनोईया देवी, सरिता दे... आदि उपस्थित थे।

हिन्दुस्तान 04
रांची • रविवार • 05 जून 2016

पर्यावरण दिवस आज

पलामू प्रमंडल